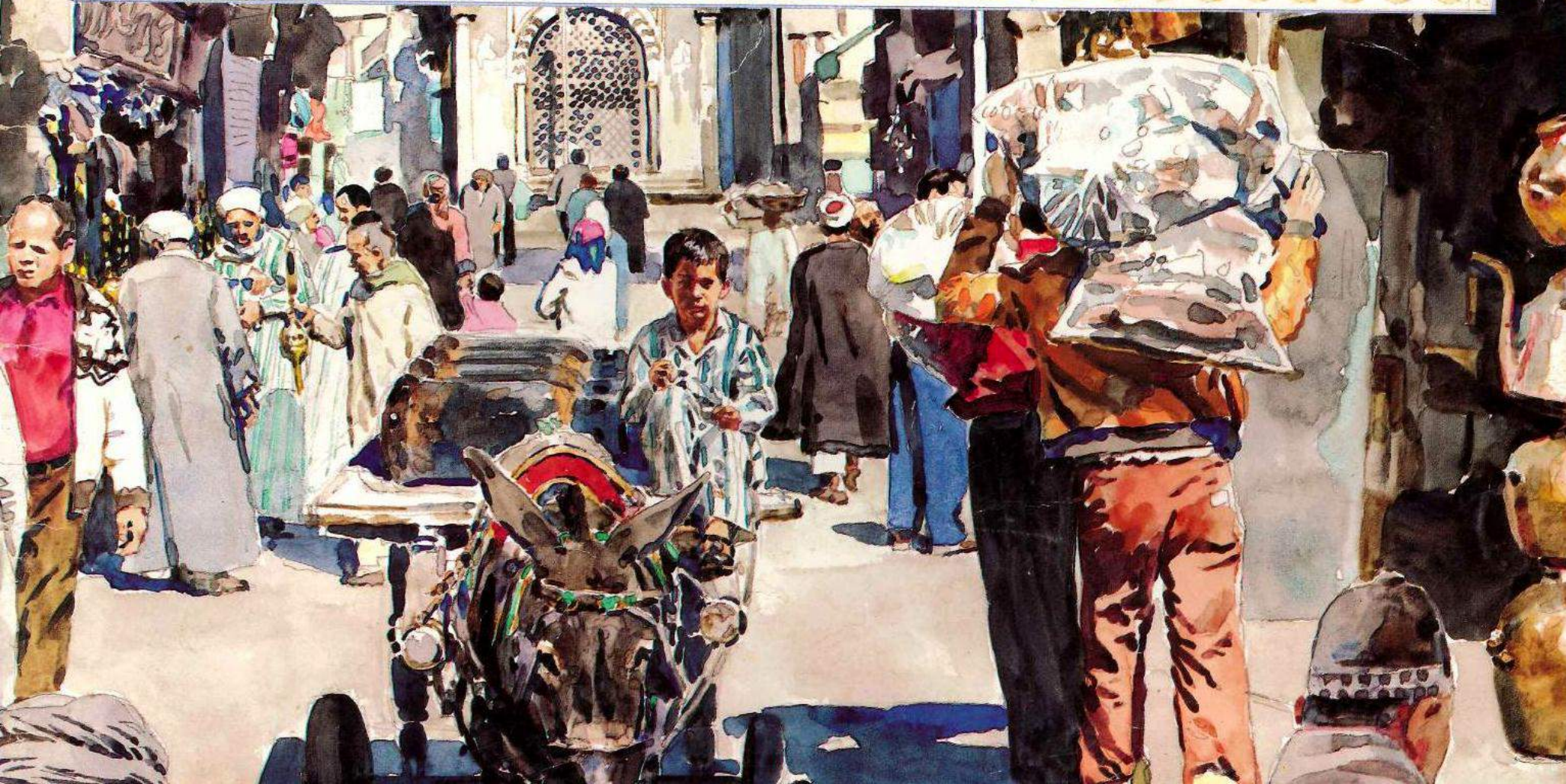


अहमद का राज़

फ्लोरेंस और जूडिथ, चित्र : टेड, हिंदी : विदूषक





अहमद का राज़

फ्लोरेंस और जूडिथ, चित्र : टेड, हिंदी : विदूषक

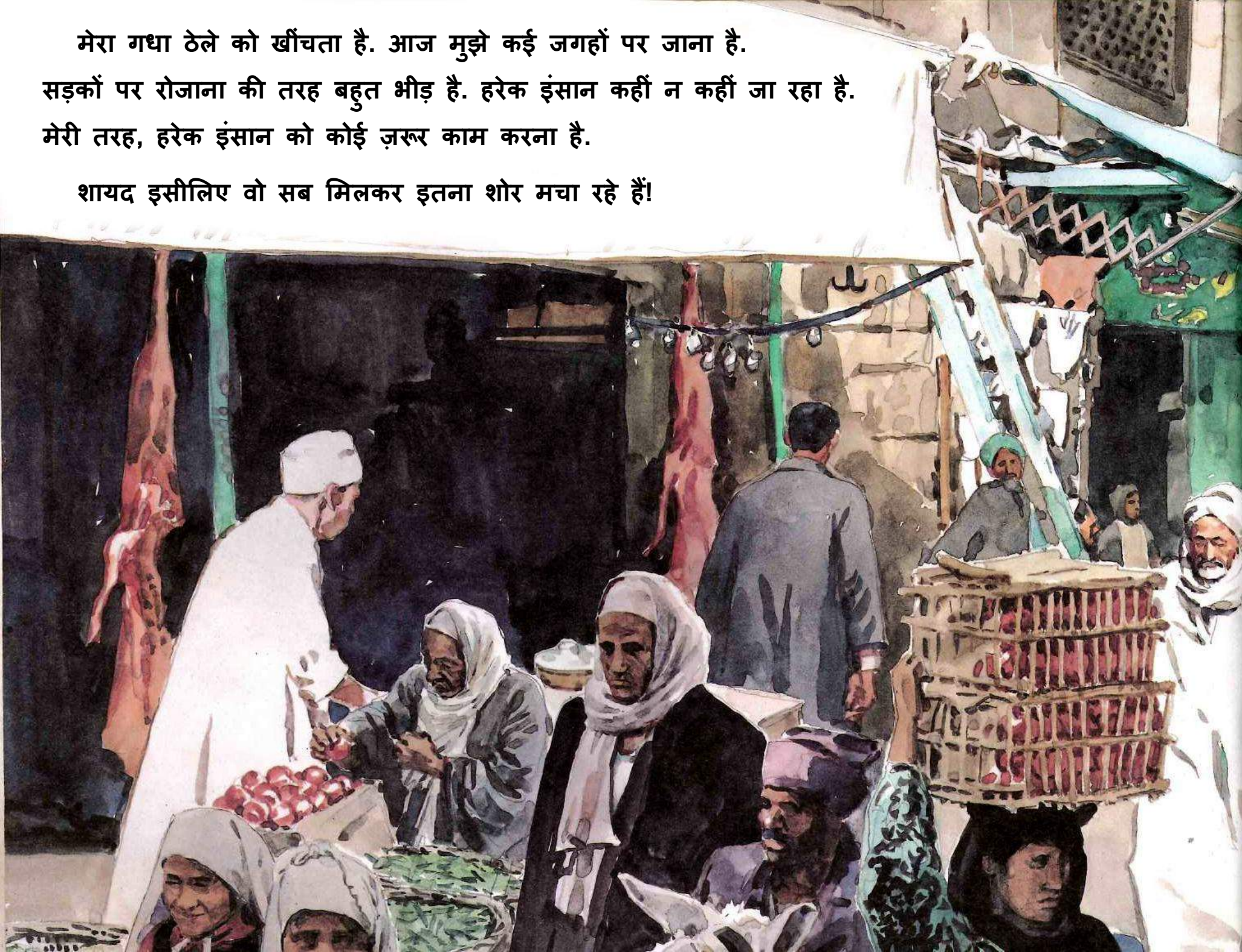
आज मेरे दिल में एक राज़ छिपा है. वो राज़ आज दिनभर एक दोस्त की तरह मेरे साथ रहेगा.

रात को मैं उसे अपने परिवार को बताऊँगा. पर अब मुझे शहर में जाकर कुछ काम करना है.



मेरा गधा ठेले को खींचता है. आज मुझे कई जगहों पर जाना है.
सड़कों पर रोजाना की तरह बहुत भीड़ है. हरेक इंसान कहीं न कहीं जा रहा है.
मेरी तरह, हरेक इंसान को कोई ज़रूर काम करना है.

शायद इसीलिए वो सब मिलकर इतना शोर मचा रहे हैं!



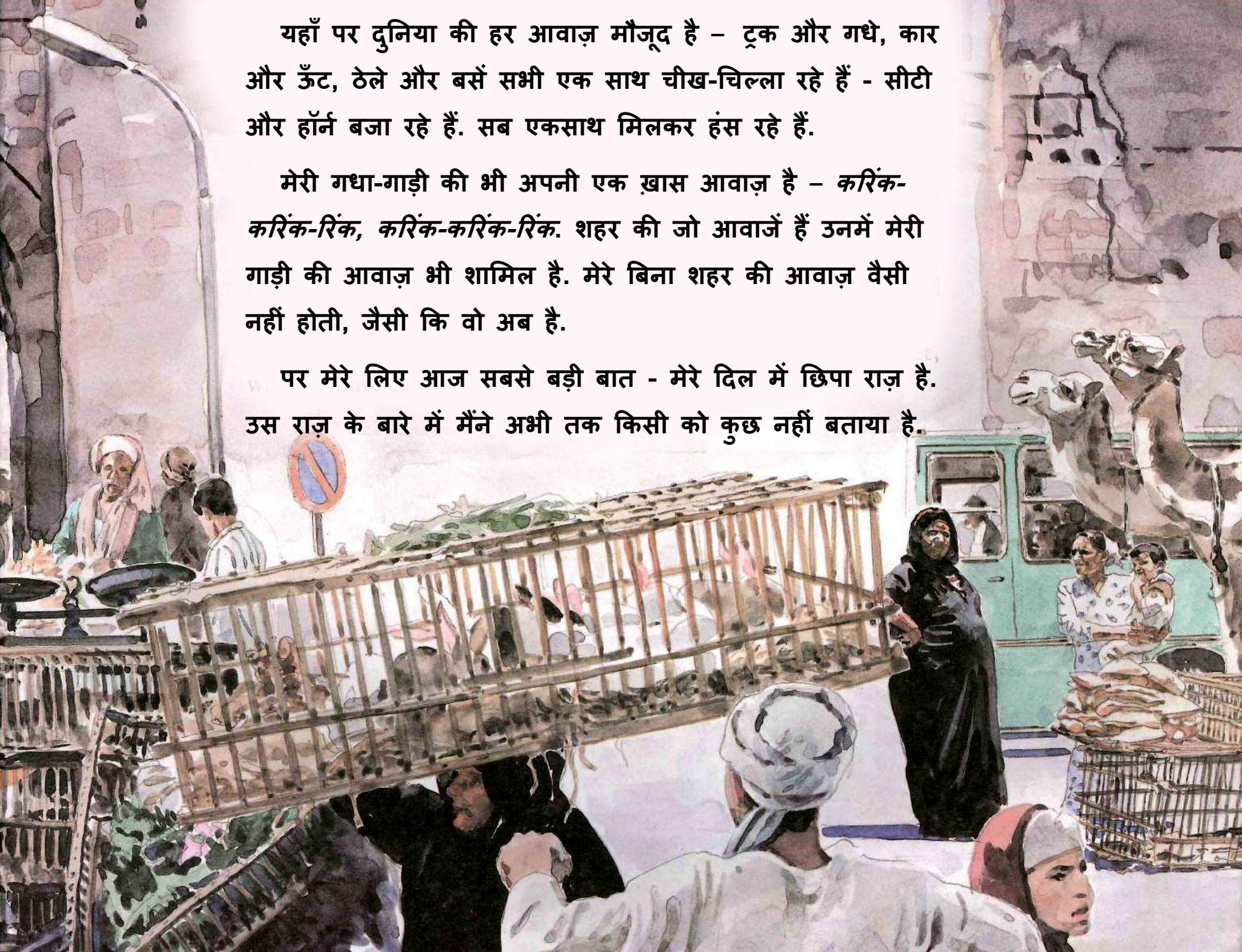




यहाँ पर दुनिया की हर आवाज़ मौजूद है - ट्रक और गधे, कार और ऊँट, ठेले और बसें सभी एक साथ चीख-चिल्ला रहे हैं - सीटी और हॉर्न बजा रहे हैं. सब एकसाथ मिलकर हंस रहे हैं.

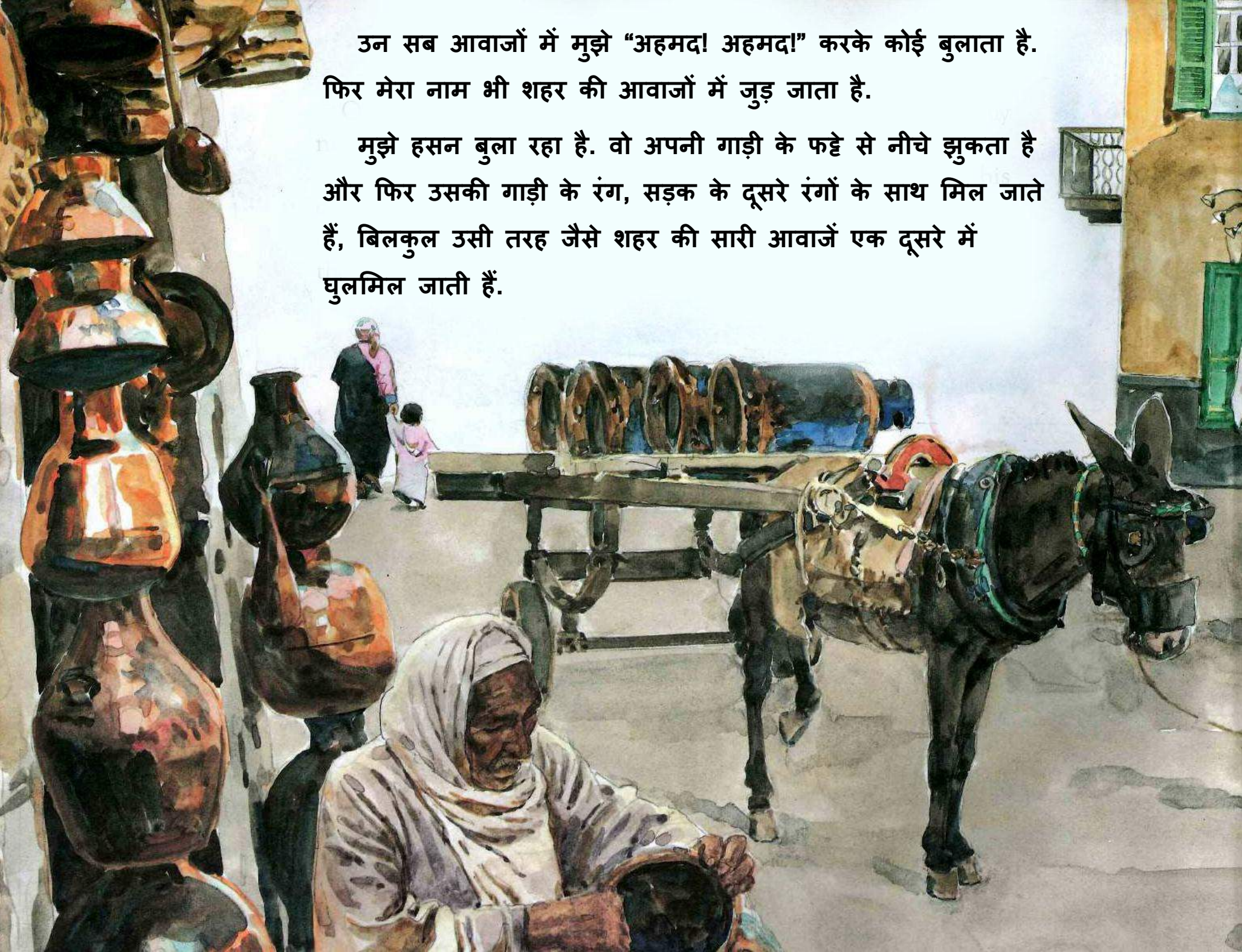
मेरी गधा-गाड़ी की भी अपनी एक खास आवाज़ है - करिंक-करिंक-रिंक, करिंक-करिंक-रिंक. शहर की जो आवाज़ें हैं उनमें मेरी गाड़ी की आवाज़ भी शामिल है. मेरे बिना शहर की आवाज़ वैसी नहीं होती, जैसी कि वो अब है.

पर मेरे लिए आज सबसे बड़ी बात - मेरे दिल में छिपा राज़ है. उस राज़ के बारे में मैंने अभी तक किसी को कुछ नहीं बताया है.

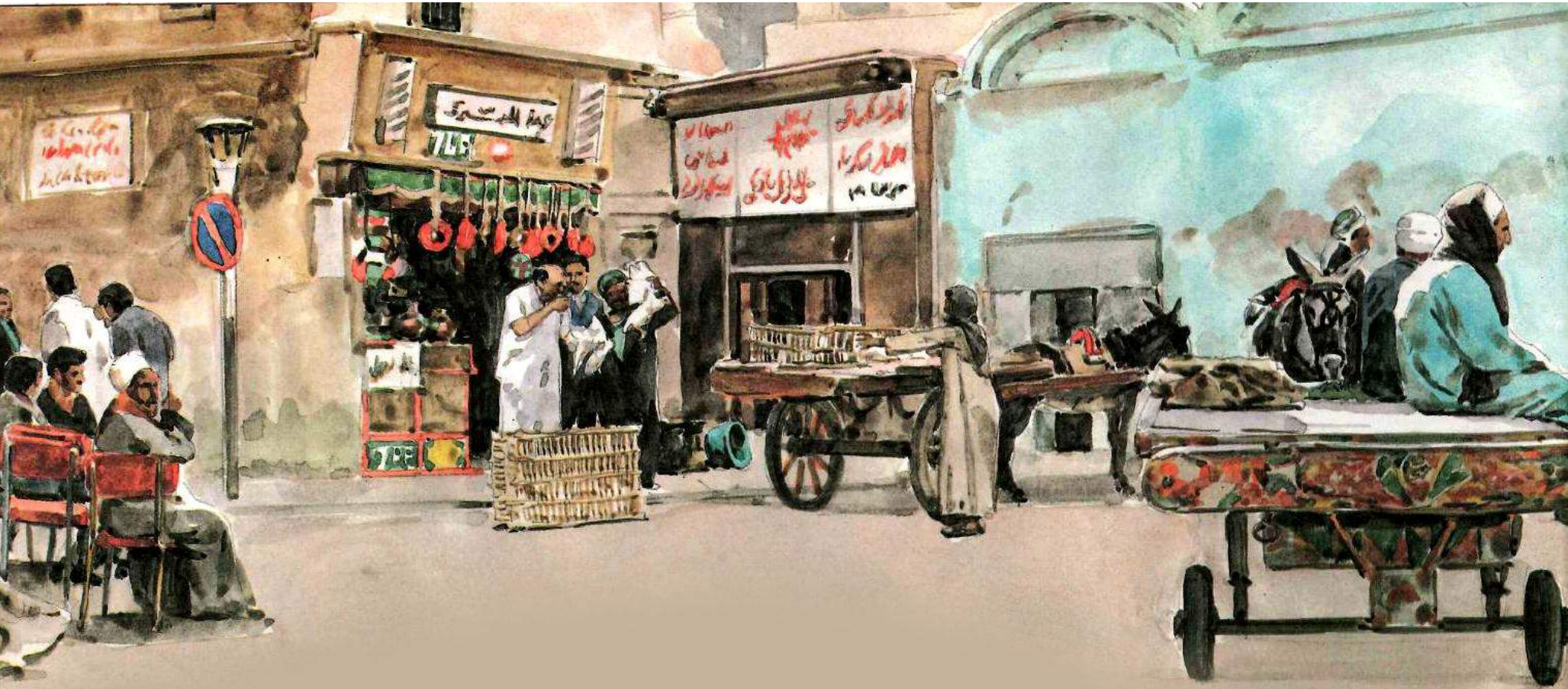


उन सब आवाजों में मुझे “अहमद! अहमद!” करके कोई बुलाता है.
फिर मेरा नाम भी शहर की आवाजों में जुड़ जाता है.

मुझे हसन बुला रहा है. वो अपनी गाड़ी के फट्टे से नीचे झुकता है
और फिर उसकी गाड़ी के रंग, सड़क के दूसरे रंगों के साथ मिल जाते
हैं, बिल्कुल उसी तरह जैसे शहर की सारी आवाजें एक दूसरे में
घुलमिल जाती हैं.







मेरी गाड़ी के खास रंग भी, शहर का ही एक हिस्सा हैं। गधे की साज-सज्जा में मेरी पसंद के – नीले, हरे और सुनहरे रंग गुंथे हैं। हसन मुझे लोबिये और नूडल्स से भरी एक प्लेट थमाता है और कहता है, “कैसा रहा आज तुम्हारा दिन, अहमद भाई?”

मैं खाता हूँ और साथ में हसन की कहानियाँ और मज़ाक पर हँसता हूँ। शाम को घर वापिस पहुँचकर मैं वो कहानियाँ अपने परिवार को सुनाता हूँ। पर आज शाम मैं उन्हें अपने राज़ के बारे में बताऊँगा। आज शाम के लिए मैंने उसे, बहुत संभाल कर रखा है।

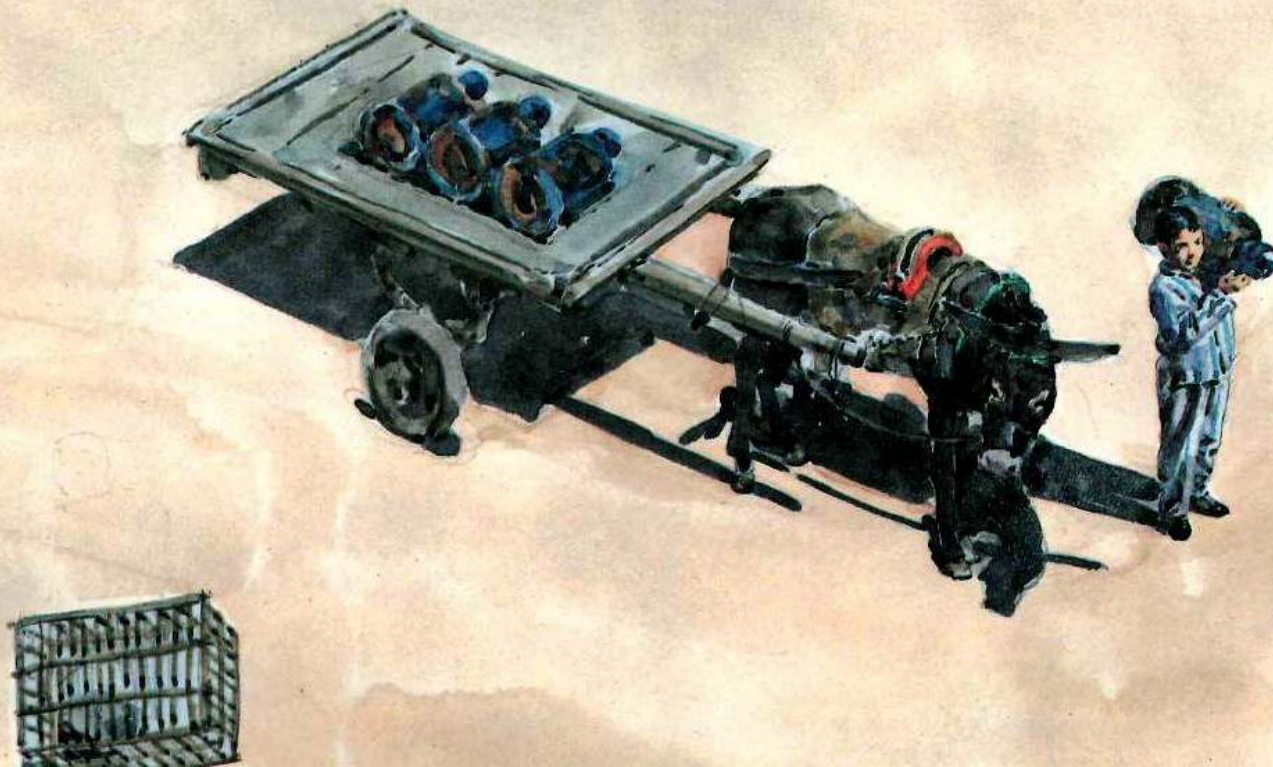
अब कोई और ग्राहक हसन की गाड़ी पर आ रहा है इसलिए मैं उससे विदा लेता हूँ। मुझे अब दिन का काम पूरा करने के लिए जल्दी करनी होगी।

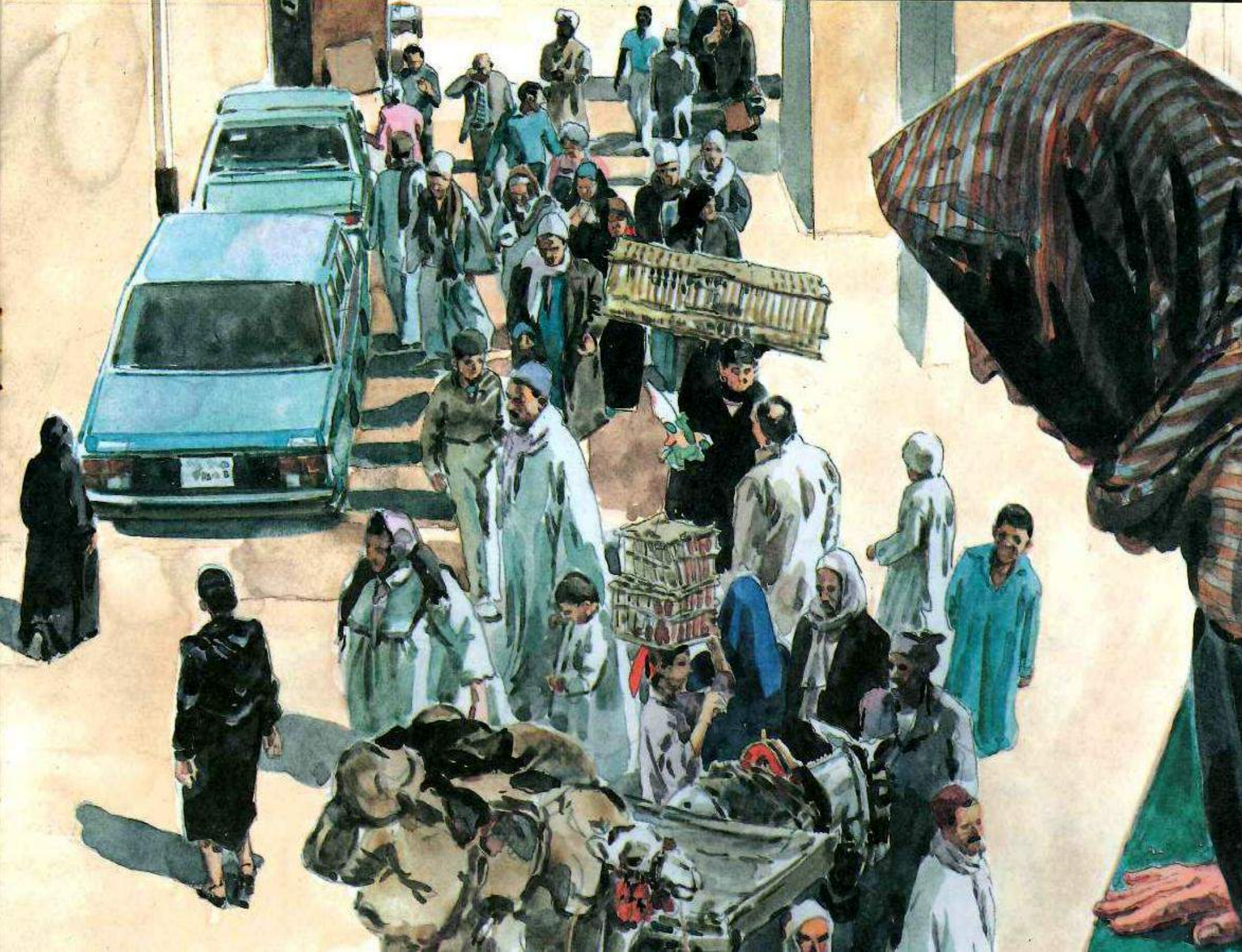


सबसे पहले मैं एक बूढ़ी औरत के घर जाता हूँ. वो काफी देर से मेरा इंतज़ार करती होगी.

“अहमद! अहमद!” वो मुझे बुलाती है. “क्या तुम आज मेरे लिए ईंधन ला रहे हो?”

बूढ़ी औरत मुझे अपनी खिड़की में से झाँक कर देखती है. मैं उसे देखकर मुस्कुराता हूँ. मुझे गर्व है की मैं उन भारी और बड़ी बोतलों को, ऊंची सीढ़ियाँ चढ़कर, ऊपर की मंजिल पर रह रही बूढ़ी औरत तक पहुंचा सकता हूँ. मुझे इस बात का भी फख्र है कि मेरी मेहनत से मेरे परिवार का गुज़ारा चलता है.



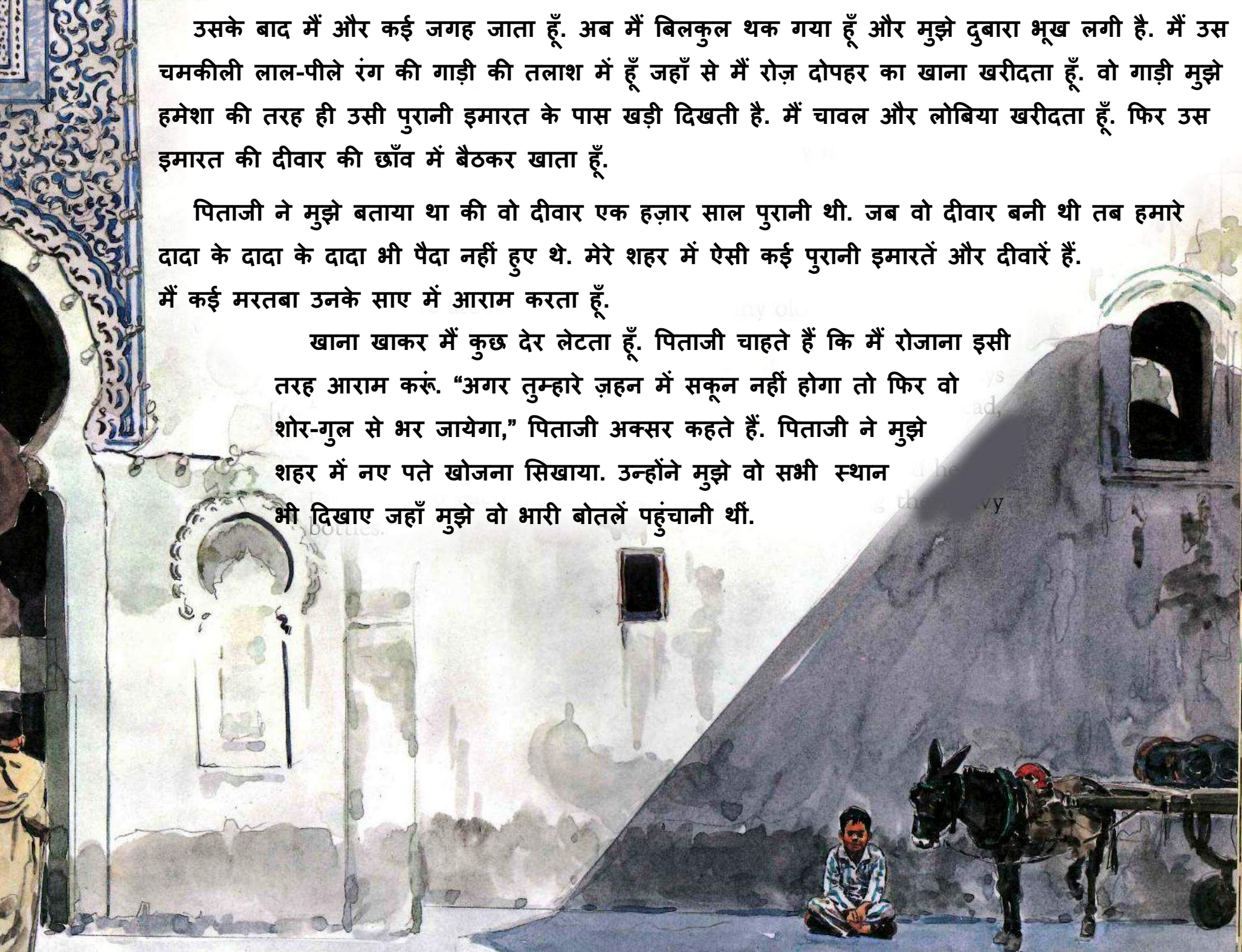




उसके बाद मैं और कई जगह जाता हूँ. अब मैं बिल्कुल थक गया हूँ और मुझे दुबारा भूख लगी है. मैं उस चमकीली लाल-पीले रंग की गाड़ी की तलाश में हूँ जहाँ से मैं रोज़ दोपहर का खाना खरीदता हूँ. वो गाड़ी मुझे हमेशा की तरह ही उसी पुरानी इमारत के पास खड़ी दिखती है. मैं चावल और लोबिया खरीदता हूँ. फिर उस इमारत की दीवार की छाँव में बैठकर खाता हूँ.

पिताजी ने मुझे बताया था की वो दीवार एक हज़ार साल पुरानी थी. जब वो दीवार बनी थी तब हमारे दादा के दादा के दादा भी पैदा नहीं हुए थे. मेरे शहर में ऐसी कई पुरानी इमारतें और दीवारें हैं. मैं कई मरतबा उनके साए में आराम करता हूँ.

खाना खाकर मैं कुछ देर लेटता हूँ. पिताजी चाहते हैं कि मैं रोजाना इसी तरह आराम करूं. "अगर तुम्हारे ज़हन में सकून नहीं होगा तो फिर वो शोर-गुल से भर जायेगा," पिताजी अक्सर कहते हैं. पिताजी ने मुझे शहर में नए पते खोजना सिखाया. उन्होंने मुझे वो सभी स्थान भी दिखाए जहाँ मुझे वो भारी बोतलें पहुंचानी थीं.

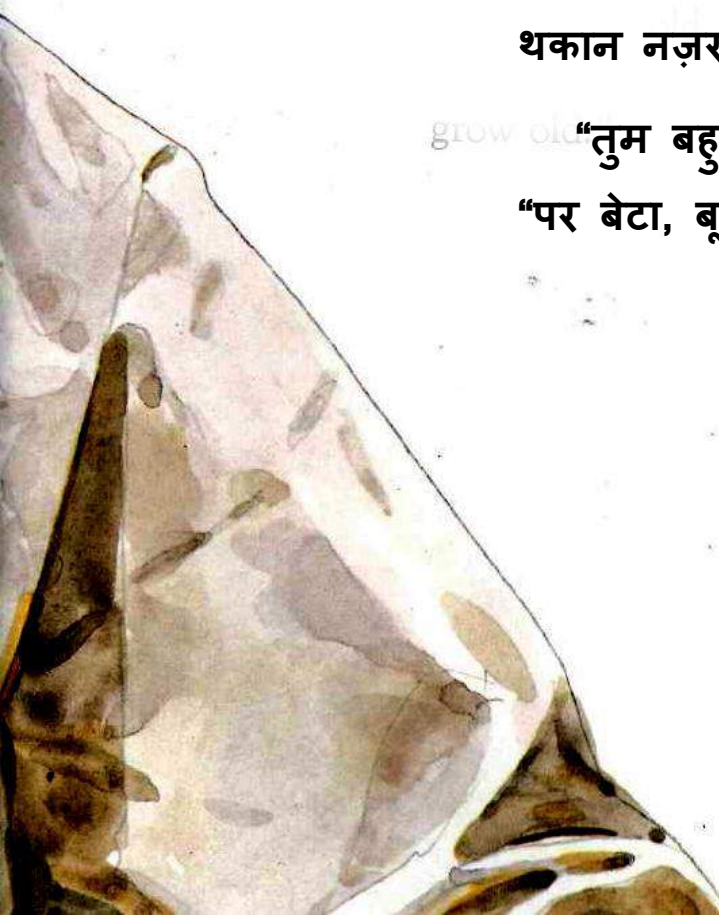


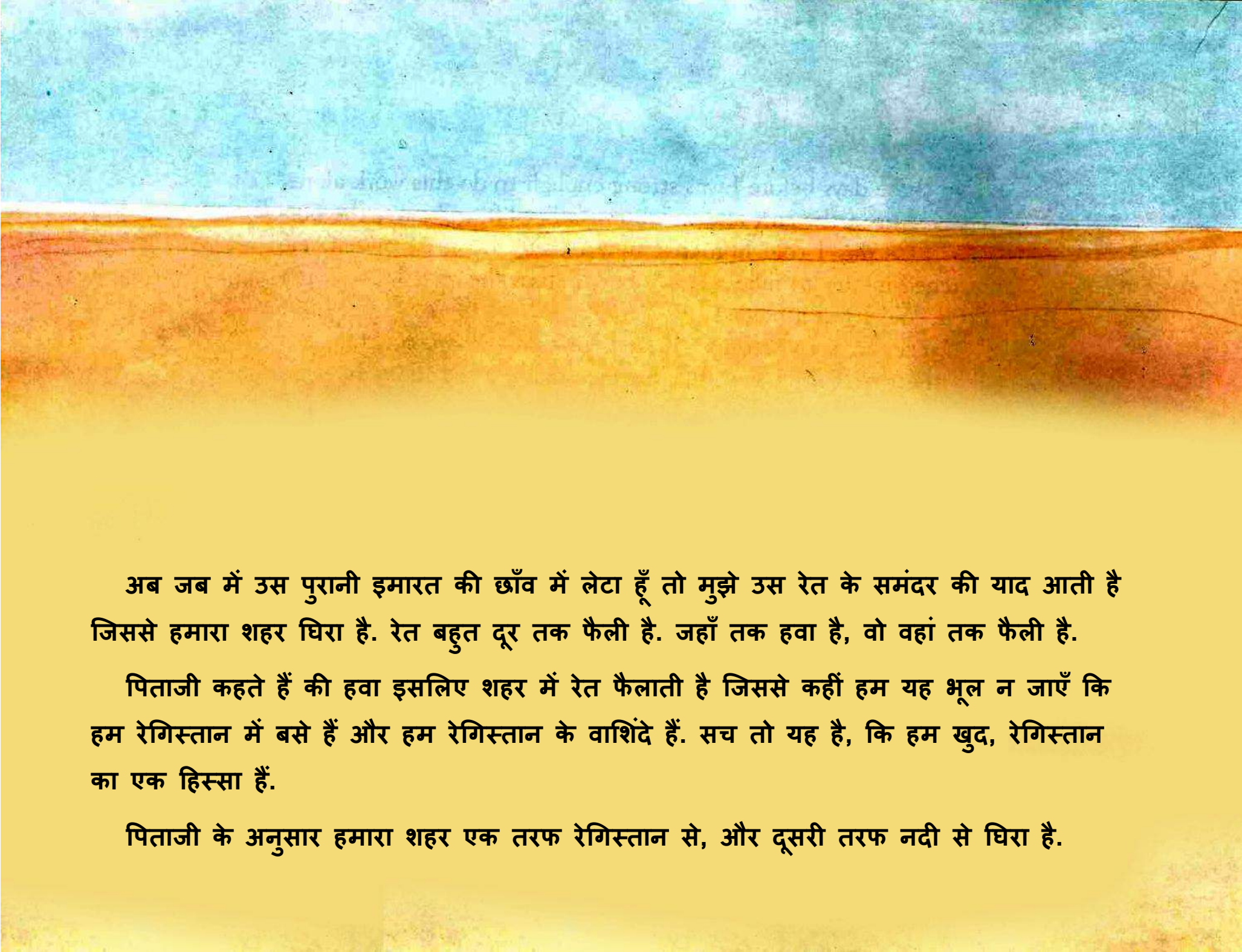


शुरु में मैं, यह भारी काम करने लायक नहीं था. तब मैं गाड़ी में बैठकर सिर्फ पिताजी को भारी बोतलें उठाते हुए देखता था. एक दिन मैंने उनसे कहा की मैं भी वो काम कर सकता हूँ. उन्होंने मुझे गाड़ी में से भारी बोतल को उठाते हुए देखा. पर मुझसे से वो भारी बोतल उठी ही नहीं! उससे मुझे बड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई.

“लगता है तुम बहुत तेज़ी से बड़े और ताकतवर बनना चाहते हो,” उस दिन पिताजी ने मुझसे कहा. ज़िन्दगी में पहली बार मुझे अपने पिताजी के चेहरे पर थकान नज़र आई. मैंने शहर में ऐसे बहुत से बूढ़े लोग देखे थे.

grow old “तुम बहुत तेज़ी से बड़े और ताकतवर ज़रूर बनो, अहमद,” पिताजी ने कहा, “पर बेटा, बूढ़े होने की जल्दी, कभी मत करना.”





अब जब मैं उस पुरानी इमारत की छाँव में लेटा हूँ तो मुझे उस रेत के समंदर की याद आती है जिससे हमारा शहर घिरा है. रेत बहुत दूर तक फैली है. जहाँ तक हवा है, वो वहाँ तक फैली है.

पिताजी कहते हैं की हवा इसलिए शहर में रेत फैलाती है जिससे कहीं हम यह भूल न जाएँ कि हम रेगिस्तान में बसे हैं और हम रेगिस्तान के वाशिंदे हैं. सच तो यह है, कि हम खुद, रेगिस्तान का एक हिस्सा हैं.

पिताजी के अनुसार हमारा शहर एक तरफ रेगिस्तान से, और दूसरी तरफ नदी से घिरा है.



“हम लोग, रेगिस्तान और नदी के बीच में रहते हैं,” पिताजी ने कहा. “रेगिस्तान और नदी दोनों हमारे दोस्त हैं.”

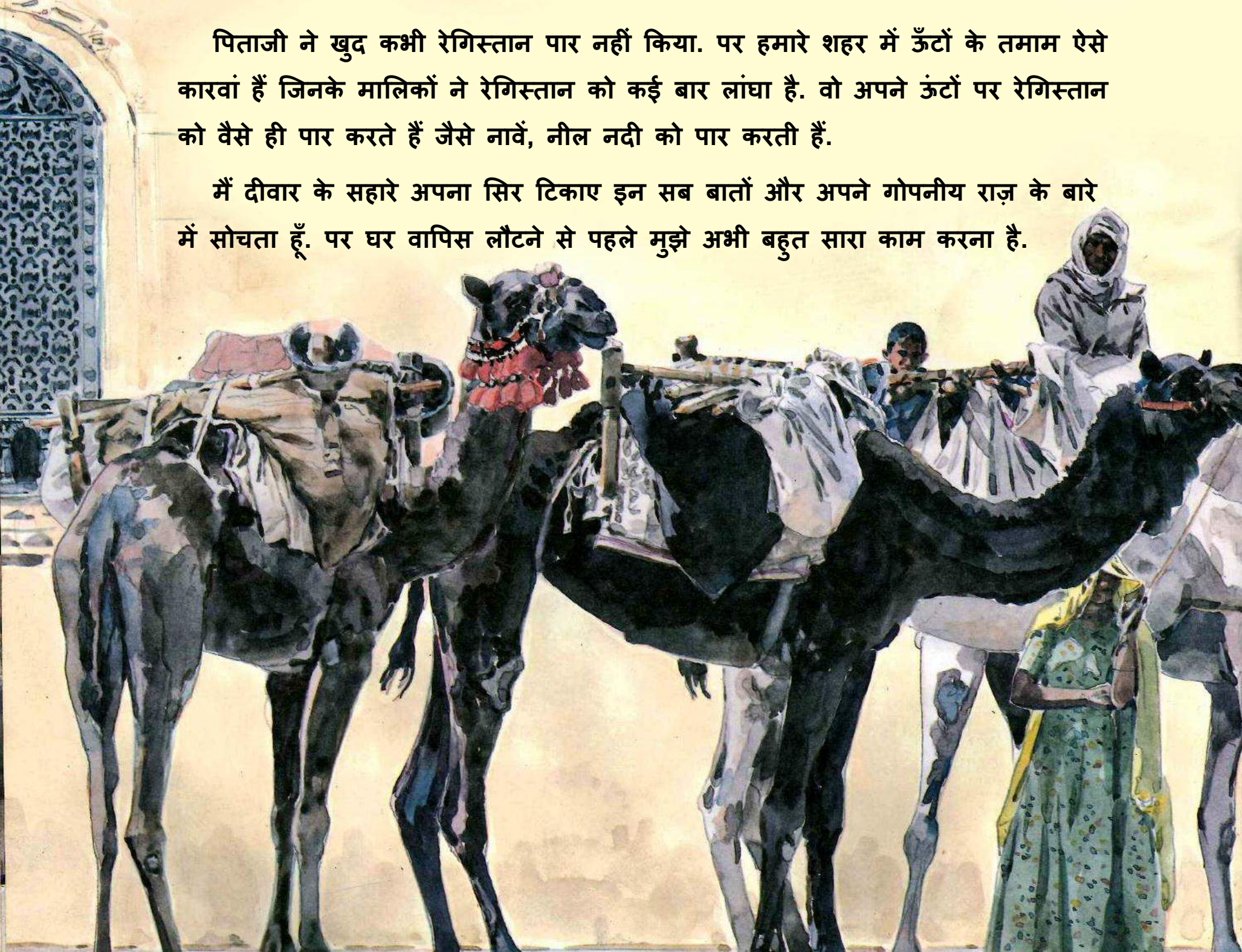
दुनिया भर के लोग हमारे शहर को जानते हैं और उसके नाम “कैयरो” (काहिरा) को याद करते हैं. लोग हमारी महान नदी “नाईल” (नील नदी) को भी याद करते हैं.

“हमारे रेगिस्तान का क्या कोई नाम है?” मैंने पूछा.

पिताजी ने जवाब में अपने कंधे उचकाए और वो मुस्कुराए. “गर्म हवाएं हमारे रेगिस्तान को घर बुलाती हैं.”

पिताजी ने खुद कभी रेगिस्तान पार नहीं किया. पर हमारे शहर में ऊँटों के तमाम ऐसे कारवां हैं जिनके मालिकों ने रेगिस्तान को कई बार लांघा है. वो अपने ऊँटों पर रेगिस्तान को वैसे ही पार करते हैं जैसे नावें, नील नदी को पार करती हैं.

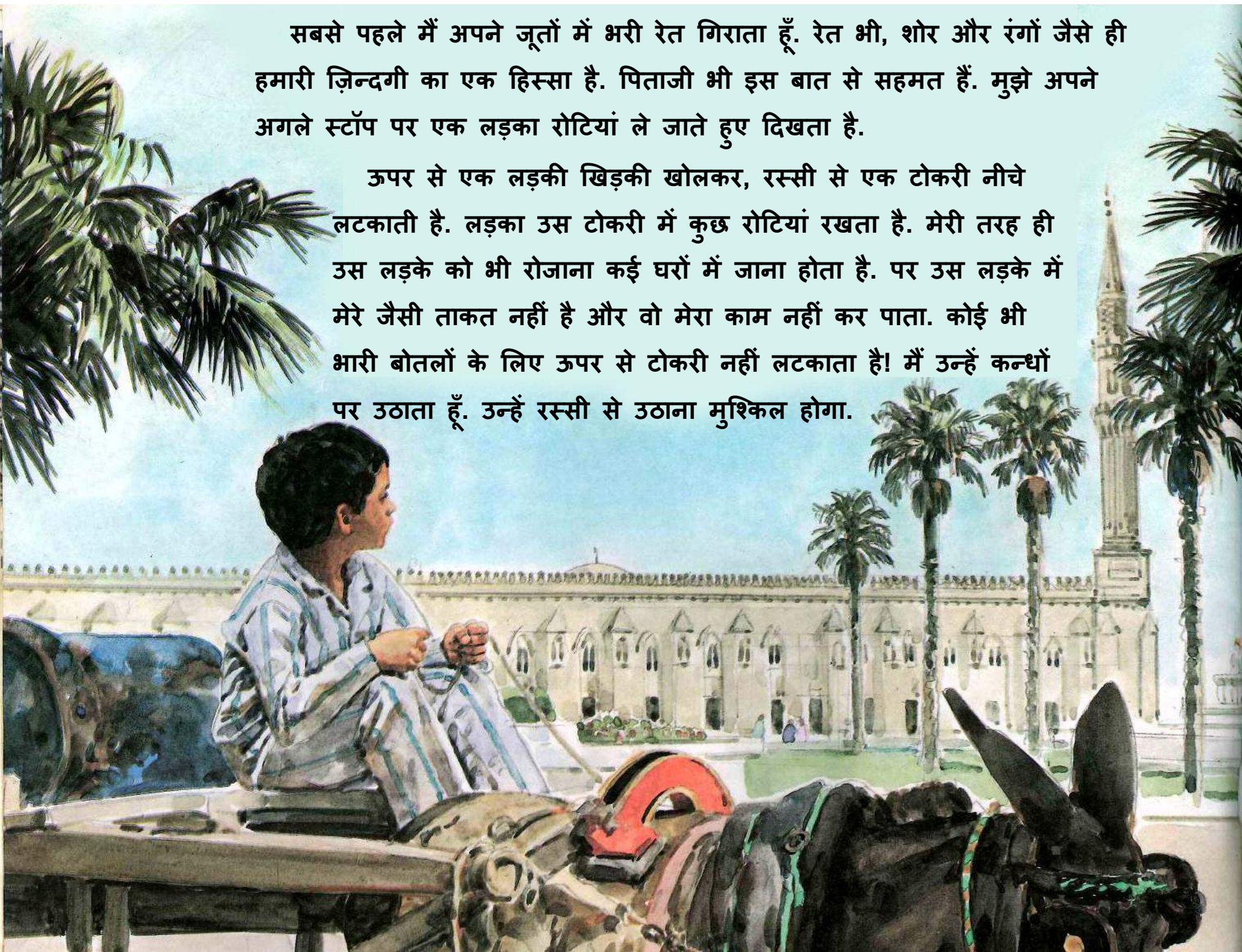
मैं दीवार के सहारे अपना सिर टिकाए इन सब बातों और अपने गोपनीय राज के बारे में सोचता हूँ. पर घर वापिस लौटने से पहले मुझे अभी बहुत सारा काम करना है.





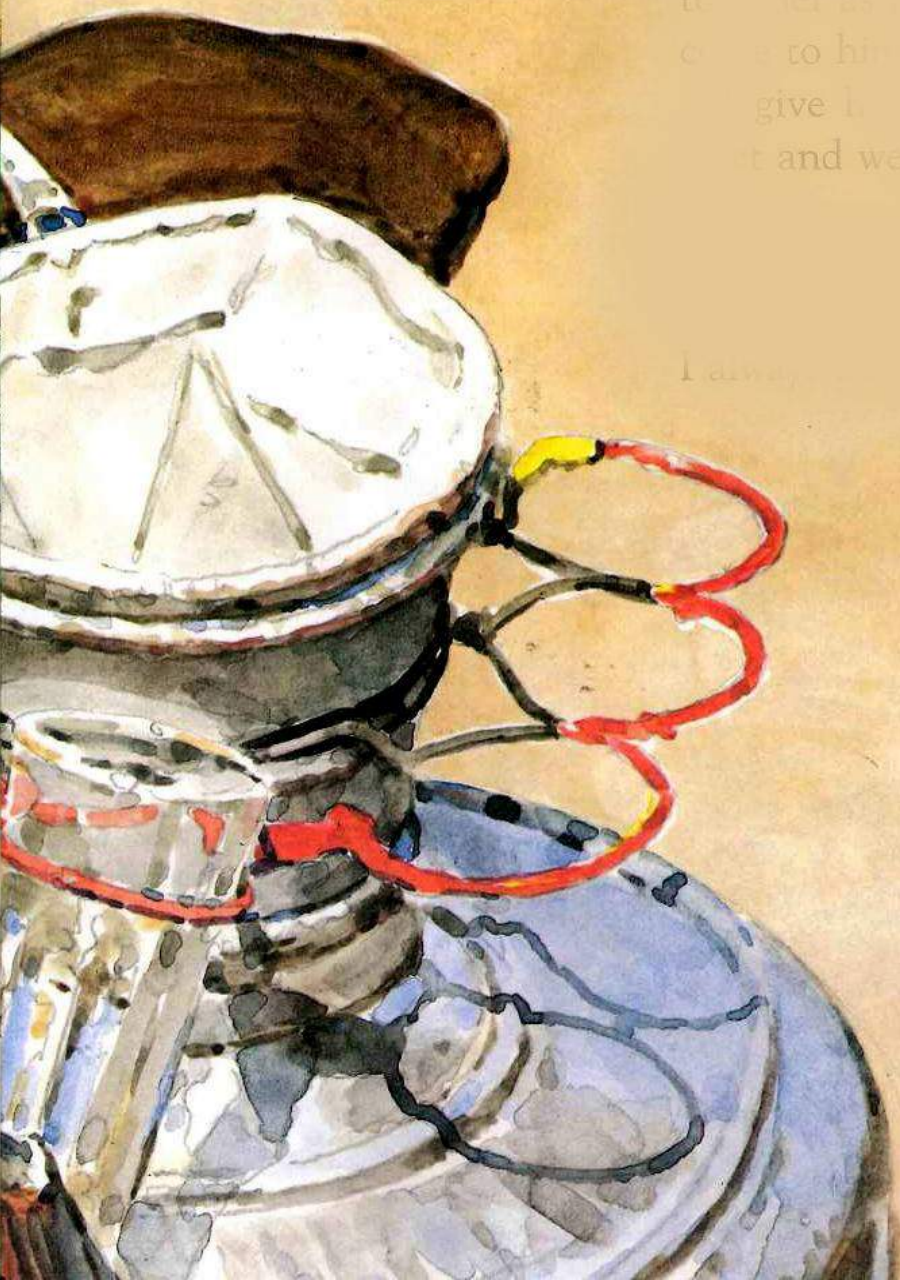
सबसे पहले मैं अपने जूतों में भरी रेत गिराता हूँ. रेत भी, शोर और रंगों जैसे ही हमारी ज़िन्दगी का एक हिस्सा है. पिताजी भी इस बात से सहमत हैं. मुझे अपने अगले स्टॉप पर एक लड़का रोटियां ले जाते हुए दिखता है.

ऊपर से एक लड़की खिड़की खोलकर, रस्सी से एक टोकरी नीचे लटकाती है. लड़का उस टोकरी में कुछ रोटियां रखता है. मेरी तरह ही उस लड़के को भी रोजाना कई घरों में जाना होता है. पर उस लड़के में मेरे जैसी ताकत नहीं है और वो मेरा काम नहीं कर पाता. कोई भी भारी बोतलों के लिए ऊपर से टोकरी नहीं लटकाता है! मैं उन्हें कन्धों पर उठाता हूँ. उन्हें रस्सी से उठाना मुश्किल होगा.









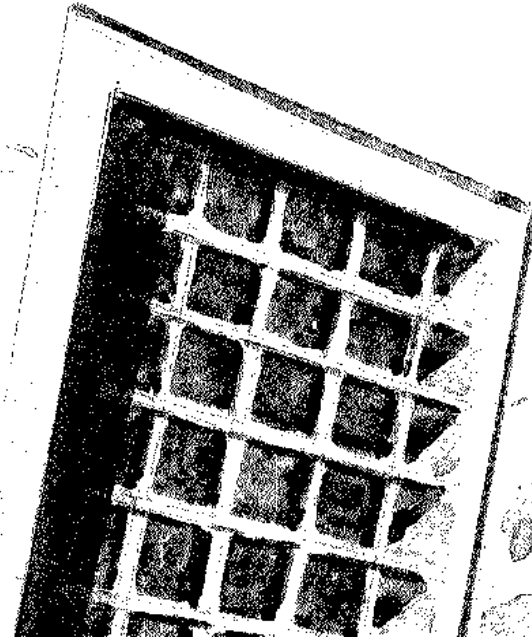
फिर मुझे गुलाब का शरबत बेंचने वाली की आवाज़ सुनाई देती है. उस आदमी को देखने से पहले ही मैं उसकी आवाज़ सुनता हूँ. वो सड़क पर चलते हुए दो प्यालों को आपस में बजाता है जिससे लोग उनकी आवाज़ सुनकर उसके पास शरबत पीने के लिए आएँ.

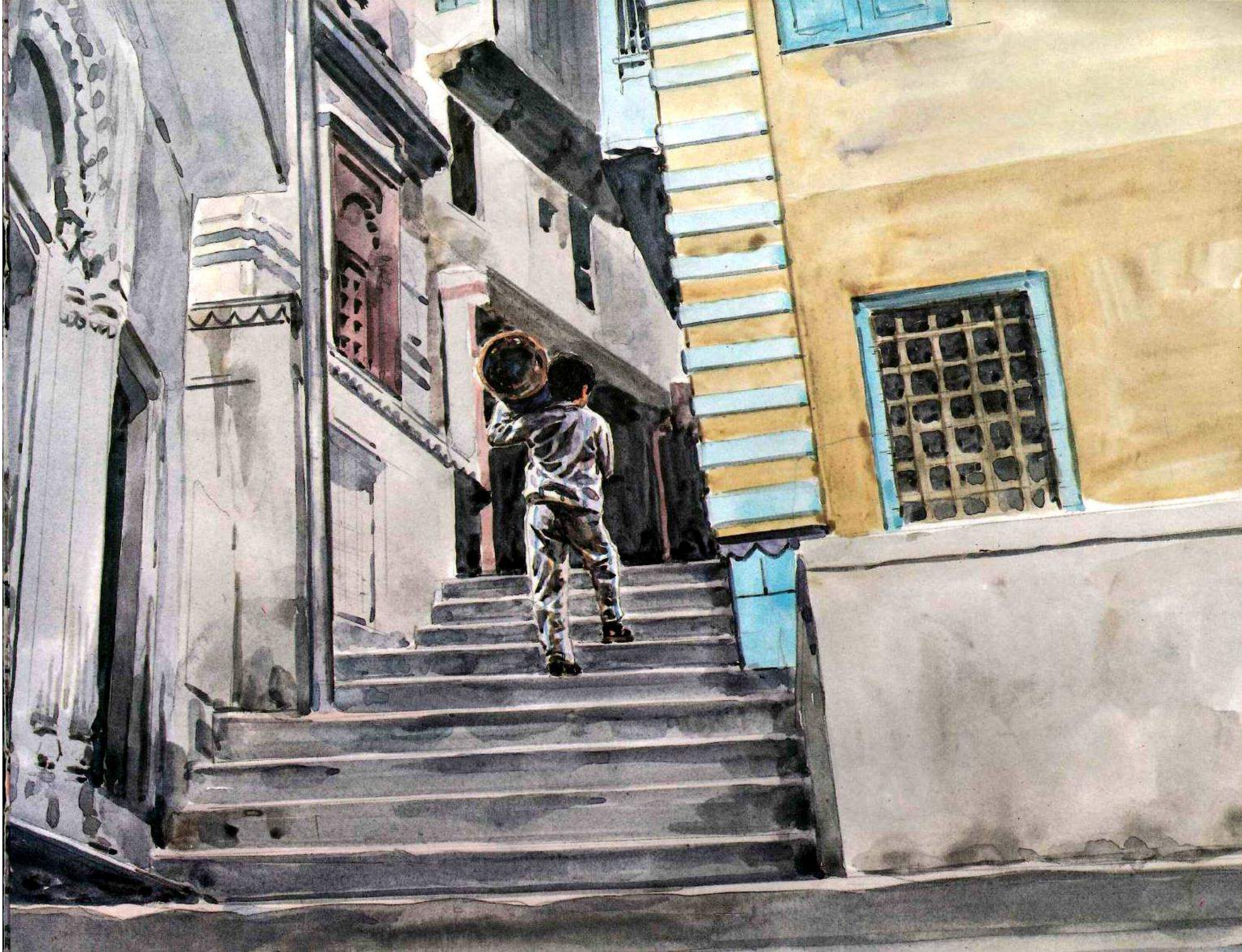
मैं उसे देखकर मुस्कुराता हूँ. पर वो मुझे सिर्फ देखता है. हम एक-दूसरे को देखते हैं. हम दोनों, एक-समय और एक-शहर के ज़रिये एक-दूसरे से जुड़े हैं.

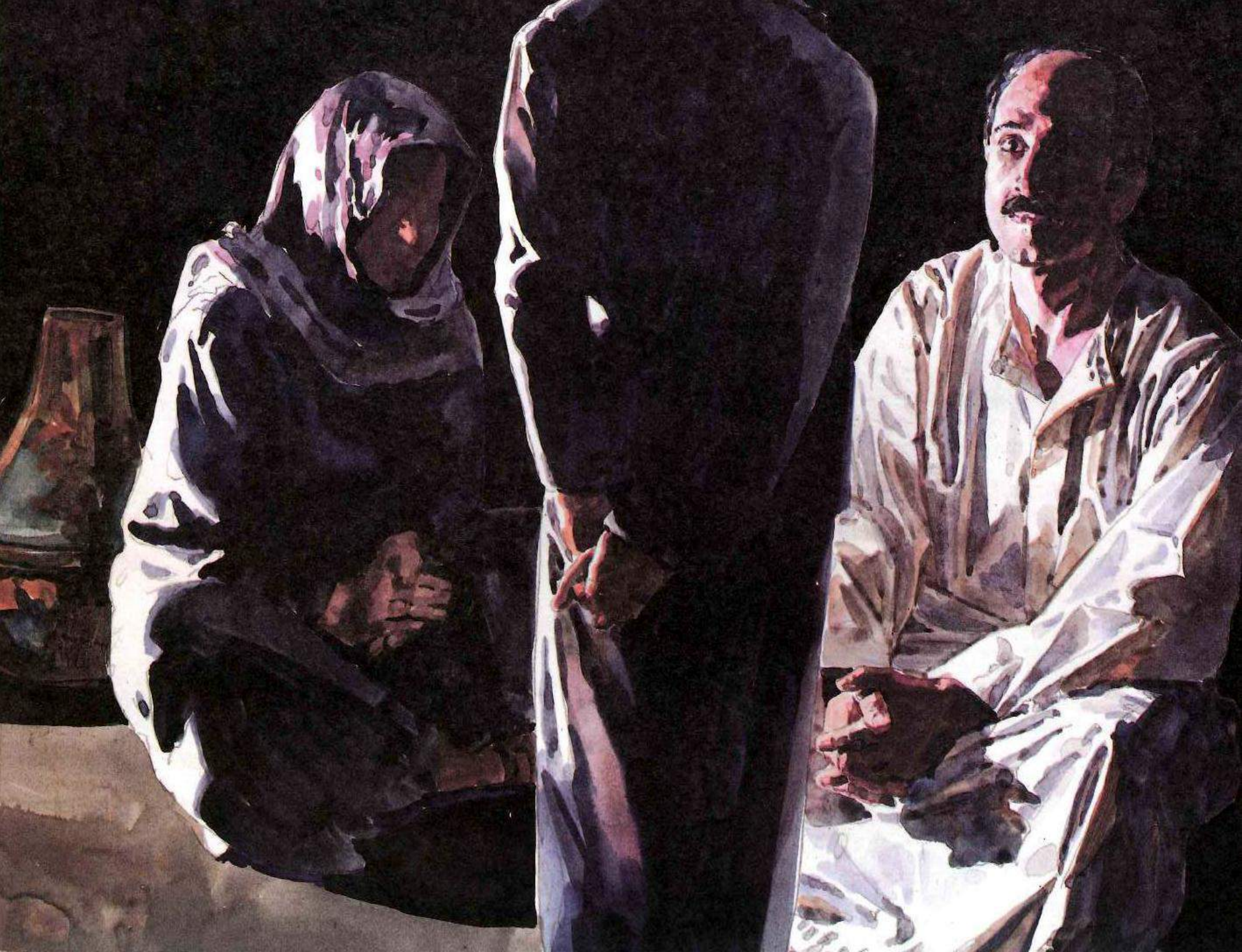
मैं उससे गुलाब का शरबत नहीं खरीदता हूँ. पर उसे देखकर मुझे आसपास की गर्मी और जोर की प्यास का एहसास ज़रूर होता है. मैं गाड़ी में रखी पानी की बोतल से पानी पीता हूँ. मैं गाड़ी में हमेशा पानी की बोतल ज़रूर रखता हूँ.

मुझे बहुत सी जगहों पर रुकना है और फिर वहां पर सकरी सीढ़ियों पर भारी बोटलों को लेकर चढ़ना है. उस काम को खत्म करने के बाद मैं फिर से अपनी गाड़ी में चलूंगा. मेरी गधा-गाड़ी - करिंक-करिंक-रिंक, करिंक-करिंक-रिंक की आवाज़ करती हुई आगे बढ़ेगी.

आज का दिन बहुत लम्बा खिंचा. शायद आज परिवार के लोगों को मुझे अपना राज़ बताने का कोई मौका ही न मिले. पर मुझे पता है कि यह दिन भी गुज़र जाएगा, और फिर मुझे कोई अच्छा मौका दुबारा ज़रूर मिलेगा.







अंत में मैं घर पहुँचता हूँ. सूरज ढल चुका है और चारों तरफ अँधेरा छा गया है.
उस घुप्प अँधेरे में, सफ़ेद और काले धागे के बीच के अंतर को बताना मुश्किल होगा.
माँ ने घर में लालटेन जलाई है. सब लोग मेरे लौटने का इंतज़ार कर रहे हैं.

दिन भर की कहानी सुनाने की बजाए मैंने उनसे कहा, “देखो, मैं आप सबको दिखाने
के लिए कुछ लाया हूँ.”

अब राज़ बताने का वक्त आ गया था. उससे पहले मैंने एक गहरी सांस ली.





“देखो,” मैंने कहा. “देखो, मैं अपना नाम लिख सकता हूँ!”

अहमद

अहमद

मैं अपना नाम बार-बार लिखता हूँ. परिवार के सभी लोग मुझे आश्चर्य से देखते हैं. मुझे लगता है कि मेरा नाम भी, शहर की पुरानी इमारतों की तरह ही, हजारों साल तक जिंदा रहेगा.

